जल का बपतिस्मा

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करणः 2023

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

अन्यथा जबतक इंगित न किया हो धर्म शास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल के पुनःसंपादित पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित है।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन

उपदेशः apcwo.org/sermons | **पुस्तकेंः** apcwo.org/books | **चर्च ऐपः** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेजः apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंगः** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्शः chrysalislife.org | **संगीतः** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिपः pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंसः** apcworldmissions.org

(Hindi - Water Baptism)

जल का बपतिस्मा

विषयसूची

परिचय

1. पश्चाताप का संकेत 1

2. सारी धार्मिकता को पूरा करना 5

3. एक साक्षी कि आप उसके शिष्य हैं 10

4. यीशु मसीह में आपके विश्वास की एक गवाही 15

5. यीशु के साथ आपकी पहचान की घोषणा 19

6. एक अच्छे विवेक का प्रतिउत्तर 23

7. कुछ समान्य प्रश्नों के उत्तर 25

परिचय

यीशु मसीह के विश्वासियों के तौर पर हमारी यात्रा में जल का बपतिस्मा एक महत्वपूर्ण अनुभव है। हम सब जिन्होंने मसीह पर विश्वास करने और उसका अनुसरण करने का निर्णय लिया है, किसी समय यह महत्वपूर्ण कदम उठाएंगे। जल का बपतिस्मा प्रभु यीशु मसीह द्वारा उन सभी के लिए एक आदेश है जो उसका अनुसरण करने का निर्णय लेते हैं। इसलिए इस आदेश का पालन करना होगा। जैसे कि आप जल का बपतिस्मा लेने के लिए तैयार होते हैं तो यह परमेश्वर के वचन से एक सरल अध्ययन है जोकि आपको इसका अर्थ और महत्व समझने में मदद करता है।

हम जल के बपतिस्मे से संबंधित छह महत्वपूर्ण सच्चाइयों को सीखते हैं:

1) पश्चाताप का संकेत

2) सभी धार्मिकता को पूरा करना

3) एक साक्षी कि आप उसके शिष्य हैं

4) यीशु मसीह में आपके विश्वास की साक्षी

5) यीशु में आपकी पहचान की एक घोषणा

6) एक अच्छे विवेक की प्रतिक्रिया

हम कुछ सामान्य प्रश्नों के उत्तर भी देते हैं जो लोग जल के बपतिस्मे के संबंध में पूछते हैं।

परमेश्वर आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
पश्चाताप का संकेत

नए नियम में, जो व्यक्ति जल के बपतिस्मे की घोषणा करते और उन्हें बपतिस्मा देते हुए आया वह युहन्ना बपतिस्मा देने वाला था। युहन्ना यीशु मसीह के अग्रदूत के रूप में आया था। उसका कार्य यीशु की सेवकाई के लिए लोगों को तैयार करना और यीशु मसीह को जगत में परिचित कराना था।

मरकुस 1:4,5
4 **युहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा** (यूनानी *बैप्टीजो*) **देता, और पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा** (यूनानी *बैप्टिजमा*) **का प्रचार करता था।**
5 **और सारे यहूदिया देश के, और यरूशलेम के सब रहने वाले निकलकर उसके पास गए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया।**

युहन्ना का बपतिस्मा पश्चाताप का बपतिस्मा था। इसका अर्थ है कि पश्चाताप करने वाले लोग आए और युहन्ना से बपतिस्मा लिया।

"पश्चाताप करो" और "पश्चाताप," शब्द युनानी भाषा के *'मेटानोइया'* शब्द से आया है, जिसका अर्थ है "मन या उद्देश्य का परिवर्तन" और हमेशा बेहतर के लिए परिवर्तन शामिल है। नए नियम में, पश्चाताप का अर्थ हमारे मन और उद्देश्य का परिवर्तन और अपने पापमय मार्ग से मुड़कर उसके मार्गों का आलिंगन करना है।

पश्चाताप जैसे कि यह पहली बार युहन्ना द्वारा पेश और प्रचार किया गया, इसके साथ सम्मिलित थाः

- पापों का अंगीकार (मरकुस 1:5)। इसका मतलब यह था कि उन्होंने परमेश्वर के सामने अपने गलत काम को पहचाना और स्वीकार किया।

- पश्चाताप *"के योग्य फल लाए"* (लूका 3:8)। इसका मतलब था कि उनकी परिवर्तित जीवन शैली उनके पश्चाताप का प्रमाण था (लूका 3:11-14)।

इस प्रकार, सर्व प्रथम यह मन (सोचने का तरीका) में बदलाव था जिसके परिणामस्वरूप जीवन (जीवन शैली) में बदलाव आया।

शब्द "बपतिस्मा" या "बपतिस्मा" देना युनानी शब्द *'बैपटीजो'* से आया है, जिसका अर्थ है "डुबकी लगाना, डुबोना, डूबना, डूबना।" बपतिस्मा जोकि बपतिस्मा देने का कार्य है वह युनानी *'बैपटिस्मा'* से आता है जिसका साधारण अर्थ है "डुबाना," "विलीनता।" यह दोनों शब्दों के अर्थ के साथ-साथ नए नियम में बपतिस्मा के कार्य और इसके आत्मिक महत्व (जो हम इस अध्ययन में बाद में देखेंगे) से स्पष्ट है कि जब कोई व्यक्ति पानी में बपतिस्मा लेता है, तो यह व्यक्ति जल में पूरी तरह से डूब जाता है या विलीन हो जाता है। **नए नियम में जल का बपतिस्मा किसी व्यक्ति पर जल का छिड़काव नहीं है, लेकिन जल में व्यक्ति का पूर्ण विसर्जन है।**

पश्चाताप और विश्वास करो

पश्चाताप का संदेश परमेश्वर के राज्य में आगमन के निमंत्रण के साथ परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार पर विश्वास करना था और है।

मरकुस 1:14,15
14 युहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।
15 और कहा, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।"

जैसे कि प्रेरित पौलुस ने बाद में इफ्सुस के लोगों को विस्तारपूर्वक बताया:

प्रेरितों के काम 19:4
पौलुस ने कहा; "युहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात यीशु पर विश्वास करना।"

इसलिए पहले हमें पश्चाताप करना चाहिए जोकि मन और उद्देश्य में परिवर्तन है। हम जान लेते हैं कि हमारे अपने तरीके विनाशक हैं। पाप का मार्ग, संसार का मार्ग, अंधकार का मार्ग या जिस किसी का भी हम अनुसरण कर रहे थे, वह हमें जीवन में नहीं ले जाता है। हमने अपने मन के बारे में परिवर्तन पाया है। फिर हम यीशु मसीह पर विश्वास करने का चयन करते हैं, उद्धार का निःशुल्क उपहार प्राप्त करते हैं जोकि हमें उसके महिमावन्त राज्य में प्रवेश उपलब्ध करवाता है अब हम यीशु मसीह और उसके राज्य के अनुसार अपनी सोच को संरेखित करते हैं। हम पश्चाताप और विश्वास करते हैं।

पश्चाताप, विश्वास करें और बपतिस्मा लें

मरकुस 16:15,16

15 और उस ने उन से कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।

16 जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।

प्रेरितों के काम 2:38,41

38 पतरस ने उन से कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

41 सो जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।

एक बार जब हमने यीशु मसीह का सुसमाचार सुना, पश्चाताप और यीशु मसीह में विश्वास किया अब हम बपतिस्मा लेने के लिए तैयार हैं। जो पापों की क्षमा और उद्धार यीशु मसीह उपलब्ध करवाता है उसके लिए जल का बपतिस्मा आधार है।

जब हम पश्चाताप और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं तो हम पाप और उसके परिणामों से बच जाते हैं। हमें नरक में परमेश्वर से अनंतकाल के लिए अलग होने के बजाय, परमेश्वर की संतान बना दिया गया, अनंत दण्ड से बचा दिया गया, उद्धार देकर उसके राज्य का हिस्सा

बना दिया गया है। हम यीशु विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए जाते हैं (इफिसियों 2:8)। अनंत जीवन परमेश्वर का *"निःशुल्क उपहार"* है जिसे हम अपने कार्यों के द्वारा नहीं कमा सकते (रोमियों 6:23)। जब हम प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं तो हम बच जाते हैं (प्रेरितों के काम 16:31; रोमियों 10:13)।

जल का बपतिस्मा एक ऐसी चीज़ है जो हमारे उद्धार के अनुभव का अनुसरण करता है। यह उस उद्धार की अभिव्यक्ति है जिसे हमने पश्चाताप और यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा प्राप्त किया है।

झलक

1) "पश्चाताप" का क्या अर्थ है?

2) "बपतिस्मा देना" शब्द का क्या अर्थ है?

3) एक व्यक्ति द्वारा जल का बपतिस्मा लेने से पहले उसके साथ क्या होना आवश्यक है?

4) क्या आपने जल के बपतिस्मा के लिए पूर्व-आपेकक्षाएं पूरी की हैं?

2
सारी धार्मिकता को पूरा करना

जब युहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने पश्चाताप के बपतिस्मा की घोषणा करते हुए अपनी सेवकाई शुरू की, यह बात देखने में दिलचस्प है कि प्रभु यीशु मसीह, जोकि प्रभु है जो मनुष्य बनकर आए, वह स्वयं युहन्ना बपतिस्मा देने वाले से जल में बपतिस्मा लेने आए थे। प्रभु यीशु का पश्चाताप करने का कोई पाप नहीं था। वह पापरहित और परिपूर्ण था, जोकि पिता की आज्ञाकारिता में हर पल जीवन व्यतीत कर रहा था। वह एक मात्र, परमेश्वर का मेम्ना था जो पूरी दुनिया के पाप को दूर करने के लिए आया था। फिर भी यीशु ने पानी में बपतिस्मा क्यों लिया था?

हम धर्म शास्त्र में दो कारण देखते हैं कि क्यों यीशु ने जल का बपतिस्मा लिया।

ये वही है

युहन्ना 1:29-34
29 दूसरे दिन उस ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, “देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है।
30 यह वही है, जिस के विषय में मैं ने कहा था, कि एक पुरूष मेरे पीछे आता है, जो मुझ से श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझ से पहिले था।
31 और मैं तो उसे पहिचानता न था, परन्तु इसलिये मैं जल से बपतिस्मा देता हुआ आया, कि वह इस्त्राएल पर प्रगट हो जाए।”
32 और युहन्ना ने यह गवाही दी, कि ”मैं ने आत्मा को कबूतर की नाईं आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया।
33 और मैं तो उसे पहिचानता नहीं था, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा, कि ’जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे; वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है।’
34 और मैं ने देखा, और गवाही दी है, कि यही परमेश्वर का पुत्र है।”

युहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने जगत के उद्धारकर्ता मसीहा को इंगित करना था। परमेश्वर ने युहन्ना को जल का बपतिस्मा देने का निर्देश दिया, जो न सिर्फ पश्चाताप के संकेत के रूप में था, बल्कि इसके माध्यम से परमेश्वर के मेमने को भी इस्राएल और जगत के सामने प्रकट करना था। इसके अलावा, आने और जल में बपतिस्मा लेने के कारण, पवित्र आत्मा उसके ऊपर उतरा और बना रहा। यह युहन्ना के लिए एक संकेत होगा कि *"यही वो है।"* इसलिए यह पहला कारण था कि यीशु को जल में बपतिस्मा दिया गया। पिता परमेश्वर ने इसे युहन्ना के लिए एक संकेत के रूप में दिया था, ताकि युहन्ना इशारा और घोषणा कर सके कि यह परमेश्वर का पुत्र है। यह युहन्ना के दृष्टिकोण से था।

यह बताना भी दिलचस्प है कि यीशु का बपतिस्मा भी डुबकी द्वारा हुआ था। यीशु को यरदन नदी में बपतिस्मा दिया गया और यह स्पष्ट है कि यीशु को पानी में डूबाया गया या विसर्जित किया गया था। इसे मत्ती की लिखित में आसानी से देखा जा सकता है: *"और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा"* (मत्ती 3:16)।

सारी धार्मिकता को पूरा करने के लिए

यीशु के दृष्टिकोण से चीजों को देखना भी दिलचस्प है। युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा यीशु को बपतिस्मा क्यों दिया गया? यीशु को ऐसा करने के लिए किस चीज ने प्रेरित किया, भले ही यीशु पूरी तरह से जानता था की युहन्ना पश्चाताप का बपतिस्मा प्रचार कर रहा था और यीशु के पास पश्चाताप करने के लिए कुछ नहीं था?

यहां पर वह सब है जो उस समय हुआ जब यीशु यरदन नदी में बपतिस्मा लेने के लिए युहन्ना के पास गया।

मत्ती 3:13-17

13 उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर युहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया।
14 परन्तु युहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि "मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यक्ता है, और तू मेरे पास आया है?"
15 यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि "अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।" तब उस ने उस की बात मान ली।
16 और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा।
17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।"

युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के लिए यह एक असामान्य अनुभव था। जब यीशु जल में बपतिस्मा लेने के लिए आगे आया। जैसे ही वह युहन्ना की तरफ आगे आया उसने तुरंत की तरफ देखकर उसे उस एक के रूप में पहचान लिया। यह असामान्य था। युहन्ना ने अभी तक आत्मा को कबूतर की तरह उतरते नहीं देखा था। स्वर्ग से अभी तक आवाज नहीं गूंजी थी। और फिर भी युहन्ना जानता था कि यह बपतिस्मा लेने वाला कोई अन्य व्यक्ति नहीं था। यह परमेश्वर का मेमना था, जो युहन्ना की सेवकाई का संपूर्ण कारण था। युहन्ना जानता था कि यही वो एक था।

इसलिए युहन्ना यीशु को बपतिस्मा देने के लिए अन इच्छुक था। लेकिन यीशु ने युहन्ना से बपतिस्मा देने के लिए अनुरोध किया ताकि वे उसे सारी *"धार्मिकता को पूरा"* कर सकें, वह सब कर सकें जो पिता की नजर में सही था और जो पिता उस चाहता था।

जल के बपतिस्मा के बारे में कुछ ऐसा था जो पापों से पश्चाताप से "बढ़कर" था। यह कुछ ऐसा भी था कि परमेश्वर का निष्कलंक पुत्र, परमेश्वर का मेम्ना भी पूरा करना चाहता था। यह परमेश्वर की इच्छा की अभिव्यक्ति थी जिसे पृथ्वी पर उतारा गया था। हर कोई जो परमेश्वर की इच्छा को धरती पर पूरा करने के लिए उसकी इच्छा के लिए "हाँ" कहता

है, वह इस अभिव्यक्ति के रूप में पानी के बपतिस्मा में कदम रखेगा। यीशु की तरह, जब आप जल में बपतिस्मा लेते हैं तो आप सारी धार्मिकता को पूरा कर रहे हैं। आप वही कर रहे हैं जो पिता की नजर में सही है। आप परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं। आप अपने जीवन में और अपने द्वारा पृथ्वी पर जारी किए जा रहे परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर की इच्छा के लिए "हाँ" कह रहे हैं।

परमेश्वर अपनी इच्छा पूरी किए जाने पर प्रतिफल देता है। पानी के बपतिस्मे द्वारा परमेश्वर के प्रति आपकी आज्ञाकारिता आपको उसका प्रतिफल प्राप्त करने की स्थिति में लाएगी। परमेश्वर उन लोगों का *"प्रतिफलदाता"* है *"जो परिश्रम से उसकी खोज करते हैं"* (इब्रानियों 11:6)।

परमेश्वर की इच्छा का इन्कार करना

जब युहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने पश्चाताप के बपतिस्मा का संदेश का प्रचार किया, तो आप लोगों ने प्रसन्तापूर्वक उसका संदेश स्वीकार किया। हालांकि, धार्मिक अगुवों, महायाजकों, फरीसियों, शास्त्रीयों और सदूकियों ने युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के संदेश को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।

इसलिए जब यीशु ने युहन्ना के बपतिस्मा के बारे में धार्मिक अगुवों से सवाल किया, तो उन्होंने जवाब देने से इन्कार कर दिया, और कहा कि *"हम नहीं जानते।"*

मरकुस 11:30-33अ

30 युहन्ना का बपतिस्मा क्या स्वर्ग की ओर से था वा मनुष्यों की ओर से था? मुझे उत्तर दो।"

31 तब वे आपस में विवाद करने लगे कि, यदि हम कहें, 'स्वर्ग की ओर से,' तो वह कहेगा; 'फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों नहीं की?'

32 और यदि हम कहें, 'मनुष्यों की ओर से' तो लोगों का डर है, क्योंकि सब जानते हैं कि युहन्ना सचमुच भविष्यद्वक्ता है।

33 सो उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, कि "हम नहीं जानते ...

लेकिन उनके द्वारा युहन्ना के संदेश का इन्कार करना, जोकि पश्चाताप करके, उसके चिन्ह के रूप में बपतिस्मा लेना था, वास्तव में परमेश्वर की इच्छा का इन्कार था।

लूका 7:29,30
29 और सब साधारण लोगों ने सुनकर और चुंगी लेने वालों ने भी युहन्ना का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर को सच्चा मान लिया।
30 पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उस से बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर की मनसा को अपने विषय में टाल दिया।

आज जब हम पश्चाताप करते हैं, यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और बपतिस्मा लेते हैं तो हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं। हम हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार करते हैं। हम सारी धार्मिकता को पूरा करते हैं, जोकि परमेश्वर की दृष्टि में सही है। हम अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा के लिए “हाँ” कहते हैं। हम अपने माध्यम से पृथ्वी पर जारी किए जा रहे परमेश्वर के राज्य को ”हाँ।”

झलक

1) युहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु को पानी में बपतिस्मा क्यों दिया?

2) इस अध्याय में आपने जो सीखा है, उसके आधार पर जब आप पानी में बपतिस्मा लेते हैं, तो आप क्या व्यक्त करते हैं?

3
एक साक्षी कि आप उसके शिष्य हैं

एक शिष्य होने के लिए निमंत्रण

यीशु की संसारिक सेवकाई के दौरान, उसे सुनने और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति, चंगाई और चमत्कार प्राप्त करने के लिए बड़ी भीड़ उसके पास आई। प्रभु यीशु ने लोगों से न सिर्फ सुनने और चमत्कार प्राप्त करने के लिए बुलाहट दी, बल्कि उन लोगों को अपने शिष्य बनने के लिए भी निमंत्रण दिया। उसने लोगों को सिखाया कि उनके शिष्य होने का क्या मतलब है और इससे उन्हें क्या मिलेगा। यह आसान नहीं था, लेकिन निमंत्रण खुला था। कोई भी व्यक्ति उसका शिष्य बन सकता है।

यहां पर कुछ बातें हैं जो यीशु ने बताईं कि उसका शिष्य बनने का क्या अर्थ है:

1) सभी शिष्यों का लक्ष्य अपने शिक्षक और स्वामी, यीशु मसीह की तरह बनना था (मत्ती 10:25)।

2) शिष्यों को अपने स्वामी की तरह ही उपहास, झूठे आरोप और उत्पीड़न का सामना करने के लिए तैयार होना चाहिए (मत्ती 10:25)।

3) शिष्य अपने स्वामी से ऊपर या बढ़कर नहीं थे (मत्ती 10:24) जिसका अर्थ है कि शिष्यों को उसी रास्ते पर चलना चाहिए जिस रास्ते पर उनके स्वामी चलते थे। शिष्यों के लिए कोई छोटा मार्ग नहीं है।

4) जब शिष्य पूर्ण रूप और अच्छी तरह से प्रशिक्षित होते हैं, तो वे अपने स्वामी की तरह होंगे (लूका 6:40)।

5) शिष्य अपने स्वामी के वचन पर विश्वास करते हैं और उसके अनुसार जीवन जीते हैं (युहन्ना 8:31)।

6) अपने स्वामी के प्रति शिष्यों का जो प्रेम है, वह किसी अन्य सांसारिक संबंधों में उनके प्रेम से बढ़कर होगा (लूका 14:26)।

7) शिष्य प्रतिदिन अपना क्रूस लेकर चलते हैं (लूका 14:27)। क्रूस दुख, अलगाव और बलिदान के स्थान का प्रतिनिधित्व करता है।

8) शिष्यों को अपने स्वामी के लिए सब कुछ त्यागन होगा (लूका 14:33)। इसका अर्थ है कि अपने स्वामी के प्रति शिष्यों का प्रेम इस संसार की किसी भी चीज़ के लिए उनके प्रेम या स्नेह से बढ़कर है।

9) अन्य लोग दूसरों के प्रति हमारे प्रेम से ही जानेंगे कि हम यीशु के शिष्य हैं (युहन्ना 13:35)।

10) शिष्य *बहुतायत से फलवंत होंगे* ताकि पिता उनके जीवन द्वारा महिमावंत हो (युहन्ना 15:8)।

11) चेले चंगाई, चमत्कार और छुटकारे का काम करेंगे जैसा कि यीशु ने किया था (मत्ती 10:1; युहन्ना 14:12)।

शिष्यों के लिए जल का बपतिस्मा

यीशु की सांसारिक सेवकाई के दौरान, उसके शिष्यों ने उन लोगों को बपतिस्मा दिया, जिन्होंने यीशु मसीह का संदेश और सेवकाई प्राप्त की थी और वे यीशु का अनुसरण करने के लिए तैयार थे। यह एक आसान निर्णय नहीं था, क्योंकि धार्मिक अगुवे इसका संज्ञान ले रहे थे और वे यीशु के उपदेश और सेवकाई से नाराज थे, फिर भी, लोग यीशु के पास आए, और उनके शिष्यों ने उन्हें जल में बपतिस्मा दिया।

युहन्ना 3:22
इसके बाद यीशु और उसके चेले यहूदिया देश में आए; और वह वहाँ उन के साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा।

युहन्ना 4:1-3
[1] फिर जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु युहन्ना से अधिक चेले बनाता और उन्हें बपतिस्मा देता है।
[2] (यद्यपि यीशु स्वयं नहीं वरन् उसके चेले बपतिस्मा देते थे)
[3] तब वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया।

इसलिए यीशु के बारह प्रेरित (या शिष्य) पहले से ही उन लोगों को बपतिस्मा देने की प्रथा से परिचित थे, जिन्होंने वह संदेश प्राप्त किया जो यीशु ने प्रचार किया था और उसके शिष्यों के रूप में उसका अनुगमन करने का चुनाव किया। इसके अलावा, कृपया ध्यान रखें कि यह डुबकी द्वारा जल में बपतिस्मा था, जैसा कि युहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा अभ्यास किया गया, क्योंकि इन शिष्यों और यीशु ने स्वयं युहन्ना द्वारा बपतिस्मा लिया था।

जल का बपतिस्मा और महान आदेश

उसके पुनरुत्थान के पश्चात, और स्वर्गारोहण से ठीक पहले, प्रभु यीशु ने वह आदेश दिया जो हम आमतौर पर "महान आदेश" के रूप में बताते हैं।

मत्ती 28:19,20
[19] इसलिये तुम जाकर, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,
[20] और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।"

महान आदेश प्रभु की आज्ञा है जाने और सभी जातियों के लोगों को शिष्य बनाने के लिए। युनानी भाषा में "शिष्य बनाना शब्द" *"माथेटियो"* है जिसका अर्थ है "एक शिष्य बनना," "एक शिक्षार्थी," "वह जो किसी के शिक्षण का अनुसरण करता है"; एक व्यक्ति जो सीखने के लिए तैयार हो, जिसे निर्देश दिया जाए, सिखाया जाए और स्वामी के वचनों में प्रशिक्षित किया जाए ताकि वह स्वामी के समान बने। यह उस विचार की ओर इंगित करता है जो जोखिम के साथ चलता है। जैसा कि हमने पहले देखा, एक शिष्य वह है जिसने यीशु की तरह बनने और प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन

(अनुगमन) करने का विकल्प चुना है। शिष्य बनाने के आदेश में उन लोगों को (जो लोग शिष्य बनने के लिए चुनते हैं) जल में बपतिस्मा देने की आज्ञा भी सम्मिलित है। हम उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा देते हैं, इस प्रकार बाइबल के परमेश्वर के साथ पहचान होती है।

इसलिए जल का बपतिस्मा उन सभी के लिए एक गवाही है जिन्होंने यीशु मसीह का शिष्य बनने का विकल्प चुना है। आपने सीखने, सिखाने और प्रशिक्षित होने के लिए इस यात्रा पर जाने का निर्णय किया है, ताकि आप भी उसकी तरह बन सकें। आपने तय किया है कि आप इस प्रक्रिया से गुजरने के लिए तैयार हैं, भले ही उपहास, उत्पीड़न, पीड़ा, बलिदान और अन्य बहुत से कष्ट झेलने पड़ जाएं। आपने यीशु मसीह के एक शिष्य के रूप में उसका अनुगमन करने का निर्णय लिया है और इसमें पीछे लौटने का कोई विकल्प नहीं है।

शिष्य ही शिष्य को बपतिस्मा देते हैं

एक अतिरिक्त टिप्पणी के रूप में हम बताते हैं कि एक बार जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह का शिष्य बनने का निर्णय लेता और जल में बपतिस्मा ले लेता है, तो वही व्यक्ति यीशु मसीह के बारे में दूसरे लोगों के साथ भी इसे सांझा कर सकता है, उन्हें जल में बपतिस्मा दे सकता है। शिष्य उन नए लोगों को बपतिस्मा दे सकते हैं जो यीशु मसीह के शिष्य बनना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, फिलिपुस यरूशलेम की कलीसिया में एक सहायक (डीकन) था। उसने जाकर सामरिया में यीशु के बारे में प्रचार किया और उसने इन नए विश्वासियों को सामरिया में बपतिस्मा दिया (प्रेरितों के काम 8:12)। फिलिपुस ने इथियोपिया के उस व्यक्ति को भी बपतिस्मा दिया जो इथियोपिया की रानी का वित्त मंत्री था। (प्रेरितों के काम 8:37,38)।

यह दमिश्क में हनन्याह नाम का एक शिष्य था जिसने शाऊल को बपतिस्मा दिया, जो बाद में प्रेरित पौलुस बन गया (प्रेरितों के काम 9:10,18)।

झलक

1) इस अध्याय में दिए गए 11 कथनों की समीक्षा करें, जिनमें यीशु मसीह के शिष्य होने का अर्थ बताया गया है। व्यक्तिगत रूप से इनका आपके जीवन के लिए क्या मतलब है, इस पर विचार करें।

2) क्या आप यीशु मसीह पर विश्वास करने और एक शिष्य के रूप में उसका अनुसरण करने के लिए व्यक्तिगत चुनाव करते हैं?

4

यीशु मसीह में आपके विश्वास की एक गवाही

जैसे कि प्रेरितों के काम अध्याय 2 में दर्ज है, यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के पश्चात 120 शिष्य पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ प्राप्त किए थे। उन्होंने लोगों को यीशु मसीह के सुसमाचार का उपदेश देने का काम शुरू किया, जोकि यरूशलेम और अन्य शहरों से शुरू हुआ था।

यीशु मसीह का सुसमाचार

यीशु मसीह का सुसमाचार यह है कि यीशु पाप और उसके परिणामों से छुटकारा देने संसार का उद्धारकर्ता बन आए। यीशु मसीह हमारे पापों की सजा स्वंय पर लेते हुए हमारे स्थान पर मर गए। उसने पाप, शैतान, बीमारी की शक्ति को तोड़ दिया, हमें अंधकार की शक्तियों से मुक्त कर दिया और हमें उद्धार का निःशुल्क उपहार दिया। क्रूस पर उसकी मृत्यु हुई, उसे दफनाया गया, वह तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठा और स्वर्ग में जाने से पहले उसने स्वंय को लगभग 500 प्रत्यक्षदर्शियों को जीवित दिखाया। उद्धार का निःशुल्क उपहार कोई भी व्यक्ति प्राप्त कर सकता है जोकि पश्चाताप और यीशु मसीह पर विश्वास मिलता है। जब हम यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में गले लगाते हैं तो हम फिर से नया जन्म लेते हैं, परमेश्वर के बच्चे बनते हैं, अन्धकार के राज्य में से निकलकर उसके शानदार साम्राज्य में प्रवेश करते हैं, और भी बहुत कुछ है। यह सुसमाचार है! मानव निर्मित धर्म हमारे लिए ऐसा नहीं कर सकता। हम इसे अपनी धर्मपरायणता, भले कार्यों या धार्मिक प्रयासों द्वारा प्राप्त नहीं कर सकते। यह एक निशुल्क उपहार है–जिसे हम सभी विश्वास माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आप यीशु पर विश्वास करते हैं, तो आएं और बपतिस्मा लें

प्रेरितों के काम पुस्तक में हमारे लिए दर्ज किया गया है कि यीशु मसीह का सुसमाचार प्रचारित किया गया और सभी लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करने का निमंत्रण दिया गया। और फिर, जिन सभी ने यीशु मसीह पर विश्वास किया उन्हें निमंत्रण दिया गया कि वे यीशु मसीह पर अपने विश्वास का अंगीकार करें (सार्वजनिक रूप से घोषणा करना, गवाही देना) और जल में बपतिस्मा लें।

यहाँ प्रेरितों के काम की पुस्तक में उस समय के कुछ उदाहरण हैं जब लोगों को पानी में बपतिस्मा दिया गया था।

- पिन्तेकुस्त के दिन विश्वासियों द्वारा (प्रेरितों के काम 2:38-41)
- सामरिया शहर के विश्वासियों द्वारा (प्रेरितों के काम 8:12,13)
- शाऊल द्वारा (जो बाद में पौलुस बना) (प्रेरितों के काम 9:17,18; प्रेरितों के काम 22:16)
- कुरनेलियुस के घराने द्वारा (प्रेरितों के काम 10:47,48)
- फिलिप्पी में विश्वासियों द्वारा (प्रेरितों के काम 16:14,15,31-34)
- कुरिन्थ में विश्वासियों द्वारा (प्रेरितों के काम 18:7,8)
- इफिसुस में विश्वासियों द्वारा (प्रेरितों के काम 19:1-5)

एक सार्वजनिक अंगीकार

प्राचीन कलीसिया के इन लोगों में से कई के लिए, जल का बपतिस्मा लेना एक आसान निर्णय नहीं था। उनमें से कई को यीशु मसीह में विश्वास करने के लिए सताया गया था। लेकिन वे उस विश्वासयोग्य को जानकर विश्वासपूर्वक अस्थिर रहे।

प्रभु यीशु ने वायदा किया था कि यदि हम उसे पृथ्वी पर लोगों के सामने स्वीकार करेंगे, तो वह हमें पिता के समक्ष स्वीकार करेगा, कि हम उसके अपने हैं!

मत्ती 10:32,33

[32] "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा।

[33] पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा, उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूँगा।

जल का बपतिस्मा यीशु मसीह को अपने जीवन का उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करने का सार्वजनिक अंगीकार है। इसमें आप लोगों के सामने घोषणा कर रहे हैं कि आप यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और गवाही देते हैं कि उसने आपको पाप से बचाया और आपने उसके उद्धार के निःशुल्क उपहार स्वीकार किया है।

प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा दिया गया

एक अतिरिक्त टिप्पणी के रूप में हम बताते हैं कि प्रेरितों के कामों में दर्ज किया गया है कि लोगों को प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा दिया गया था। यहां पर कुछ संदर्भ दिए गए हैं।

प्रेरितों के काम 2:38

पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

प्रेरितों के काम 8:16

क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था; उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था।

प्रेरितों के काम 10:48

और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे।

प्रेरितों के काम 19:5

***यह* सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया।**

जब आप प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लेते हैं, तो इसका अर्थ है कि आप उसके साथ समानता में आ रहे हैं। आप सार्वजनिक रूप यीशु के साथ समानता में आ रहे हैं। इसका आत्मिक महत्व भी है, जिसे हम अगले अध्याय में बताएंगे।

"यीशु के नाम में" शब्द का उपयोग दर्शाता है कि किसके अधिकार और किसके प्रतिनिधि के रूप में इसको किया जाता है। इसलिए जब कोई "यीशु के नाम में," बपतिस्मा लेता है, तो इसका मतलब है कि यीशु मसीह ने हमें महान आदेश के माध्यम से (पिछले अध्याय को देखें) यह अधिकार दिया है कि हम नए शिष्य को जल का बपतिस्मा दे रहे हैं। हम ऐसा उसके नाम में, उसकी ओर से, उसके प्रतिनिधि के रूप में, पूर्ण अधिकृत और सशक्त होकर करते हैं।

इसलिए, जब हम लोगों को बपतिस्मा देते हैं, तो हम कहते हैंः "यीशु के नाम में, मैं तुम्हें बपतिस्मा देता हूं, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में।" इसका अर्थ है कि हम इसे उस अधिकार के साथ कर रहे हैं जो यीशु मसीह ने हमें दिया है, और हम इस व्यक्ति को बपतिस्मा दे रहे हैं, जो यीशु मसीह के माध्यम से बाइबल के परमेश्वर के साथ समानता में आ रहा है।

झलक

1) क्या आप इसे पूर्ण रूप से समझ गए हैं और यीशु मसीह के सुसमाचार (अच्छी खबर) पर विश्वास करते हैं?

2) क्या आप यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने के लिए तैयार हैं?

5
यीशु के साथ आपकी पहचान की घोषणा

प्रभु यीशु ने कलीसिया में दो प्रथाओं को रखा हैः जल का बपतिस्मा और प्रभु की मेज। ये दोनों इस बात की घोषणा करने के शक्तिशाली तरीके हैं कि यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से हमारे लिए क्या पूरा किया। प्रभु से निर्देशन पाकर, प्रेरित पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 11:26 में लिखा, *"क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।"* इसलिए जब हम प्रभु की मेज में भागीदार होते हैं, तो हम यीशु मसीह के क्रूस पर किए काम और उसके जल्द लौटने पर हमारे विश्वास की घोषणा और ऐलान करते हैं।

इसी तरह, जल का बपतिस्मा यीशु के साथ हमारी पहचान की घोषणा है। हम दृश्य और अदृश्य संसार को यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर किए गए कार्य और उसके कारण जो हमारे साथ हुआ उसकी घोषणा और ऐलान करते हैं यह हमारे अंदर एक आत्मिक वास्तविकता है। यह हमारे साथ पहले ही हो चुका है। **जल का बपतिस्मा प्रतीकात्मक रूप से उस की आत्मिक अभिव्यक्ति और शक्तिशाली उद्घोषणा है जो आत्मा में पहले से ही हो चुका है।** यहां पर वह है जो प्रेरित पौलुस ने बतायाः

रोमियों 6:3,4

3 क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया

4 सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

कुलसियों 2:12
और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।

जब हमने नया जन्म पाया तो परमेश्वर हमें मसीह में लेकर आये (1 कुरिन्थियों 1:30)। हम उसमें, आत्मिक रूप से उसके साथ हैं (1 कुरिन्थियों 6:17)। पवित्र आत्मा ने हमें मसीह में रखा है (1 कुरिन्थियों 12:13)। आत्मिक रूप से हम पहले से ही मसीह में हैं। इतना ही नहीं कि हम उसके "हैं," हमें उसकी मृत्यु (क्रूस), दफनाने, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और स्वर्ग में बैठने में भी समानता मिली है। इसे पहचान (समानता) कहा जाता है।

- **उसकी मृत्यु में समानता (क्रूसीकरण):** जब मसीह की मृत्यु हुई, हम उसके साथ मारे गए। पुराना पापी स्वभाव, *"पुराना मनुष्य उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था"* (रोमियों 6:6)। अब हमारे अंदर कोई पुराना पापी स्वभाव नहीं है। अब हम *"दिव्य स्वभाव के भागीदार हैं"* (2 पतरस 1:4)। हमारे जीवन में से पाप का अधिकार टूट है और हम अब पाप के गुलाम नहीं हैं (रोमियों 6:14)।
- **उसके दफनाने में समानता:** जब मसीह को दफनाया गया था, तब हमें भी दफनाया गया था। इसका अर्थ है कि हम पुराने जीवन से अलग हो गए थे। पुराना जा चुका है। नया आ चुका है। हम एक नई सृष्टि हैं और पुराने का हमारे ऊपर या हमारे किसी भी हिस्से पर कोई अधिकार नहीं है (2 कुरिन्थियों 5:17)।
- **उसके पुनरुत्थान में समानता:** जब मसीह पुनर्जीवित हुआ, तो हमें उसके साथ जिलाया गया था (इफिसियों 2:5)। इसका अर्थ है हम मृत्यु में से जीवन में, शैतान के अधिकार में से परमेश्वर के अधिकार में लाया गया है (कुलुस्सियों 1:13)। अब हम परमेश्वर के राज्य के एक नए जीवन में चलते हैं। अन्धकार के राज्य का हमारे ऊपर कोई अधिकार नहीं है।

- **उसके स्वर्गारोह में समानता:** जब मसीह ऊपर गया, हम भी *"उसके साथ उठाया"* (इफिसियों 2:6; कुलुस्सियों 3:1-3)। इसलिए हम ऊपर की चीजों पर अपना ध्यान लगाते हैं। हम एक नए मन के साथ जीते हैं जिसमें हम जीवन को स्वर्ग के दृष्टिकोण से देखते हैं। हमारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा है।
- **उसके बैठने में समानता:** जब मसीह पिता के दाहिने हाथ में उसके सिंहासन पर बैठा, तो हमें भी उसके साथ बिठाया गया था (इफिसियों 2:6)। हम यीशु मसीह के साथ शैतान और उसके दुष्ट दलों को अपने पैरों तले रखकर, अधिकार और प्रभुता के स्थान पर बैठे हैं।

जल का बपतिस्मा इन सब की एक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। जब आप पानी में डूबे (डूबाए गए), तो यह आपकी मृत्यु (क्रूस) और यीशु मसीह के साथ दफन होने का प्रतीक है। जब आप पानी से बाहर आते हैं, तो यह आपके जी पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और यीशु मसीह के साथ बैठने का प्रतीक है।

जब आप जल में बपतिस्मा लेते हैं, तो आप दृश्य और अदृश्य जगत में एक घोषणा करते हैं कि आपको आत्मिक रूप से यीशु मसीह के साथ उसकी मृत्यु, दफन, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और स्वर्ग में बैठने में समानता मिली है। यह एक प्रतीकात्मक कार्य है, और ये बहुत शक्तिशाली है। जल के बपतिस्मा के समय आप पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा क्रूस की सामर्थ की अपेक्षा कर सकते हैं। यदि पिछले जीवन की कुछ चीजें (पाप, व्यसन, शर्म, आघात, आदि) आपको ताना मार रही है और आपको पकड़कर रखने की धमकी दे रही हैं, तो साहसपूर्वक यह घोषणा करें कि आपके ऊपर उनकी शक्ति टूट चुकी है। जल के बपतिस्मा में पुराने जीवन की सभी शक्तियों के टूटने की घोषणा की अपेक्षा करें।

इसलिए प्रेरित पौलुस इस बात पुष्टि करता है कि, हमने "मसीह को पहन लिया है।"

गलातियों 3:27
और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।

तो हम यीशु के साथ एक हैं, ताकि जब लोग हमें देखें तो वे यीशु को देखें। हमें उसी को पहनना है। पवित्र आत्मा दिन-प्रतिदिन हमें अपनी समानता में बदल देता है, ताकि लगातार, लोग मसीह को हम में देखें, क्योंकि हमने उसको को धारण किया है।

झलक

1) आप यीशु मसीह के साथ आत्मिक रूप से

- उसकी मृत्यु (क्रूसीकरण) (रोमियों 6:6),
- उसके दफनाने (रोमियों 6:4),
- उसके पुनरुत्थान (इफिसियों 2:5),
- उसके स्वर्गारोहण (इफिसियों 2:6) और
- उसके बैठने के स्थान की समानता में लाए गए हैं (इफिसियों 2:6)।

इस अध्याय में जो बताया गया है, उसके आधार पर, इन पाँच पहलुओं में से प्रत्येक का व्यक्तिगत रूप से आपके लिए क्या अर्थ है, इस पर विचार करें।

6
एक अच्छे विवेक का प्रतिउत्तर

प्रेरित पतरस ने नूह के जहाज का उल्लेख किया है जिसमें आठ लोग जल प्रलय से बच गए थे। वह तब जल के बपतिस्मा को इस बात का प्रतीक बताता है। हम भी यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार अनुभव करते हैं जोकि मृतकों से जिलाया और स्वर्ग में सर्वोच्च स्थान पर बैठाया गया है।

1 पतरस 3:20-22
20 जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी, जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए।
21 उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है।
22 वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन किए गए हैं।

जैसा कि पतरस ने जल के बपतिस्मा का उल्लेख किया है, वह बताता है कि बपतिस्मा जल द्वारा बाहरी धुलाई नहीं है जो हमारी त्वचा से गंदगी को हटाता है, लेकिन इस तथ्य के साथ कि हमारा विवेक अब साफ हो (धोया) गया है और परमेश्वर के प्रति अच्छा है। यह निश्चित रूप से प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास के माध्यम से हुआ है।

जब हमने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया, तो उसके लहू ने हमारे पापों को धो दिया और अभी भी धोना जारी है। हमें परमेश्वर की धार्मिकता बनाया गया है। हम उसकी दृष्टि में शुद्ध; परमेश्वर की उपस्थिति स्वीकृत और प्रिय हैं। हमारा विवेक परमेश्वर के प्रति अच्छा और शुद्ध है। हमारे अंदर अपराध, लज्जा, दोषभावना या निंदा का भाव नहीं है जो हमें किसी

भी तरह से परमेश्वर से संबंधित होने से रोकता है। केवल यीशु मसीह ही हमें परमेश्वर के साथ इस तरह के रिश्ते में ला सकता है। **अब आप पानी में बपतिस्मा ले रहे हैं क्योंकि आपकी अंतरात्मा को यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर की ओर अच्छा और शुद्ध किया गया है।**

जल का बपतिस्मा अच्छे विवेक वाले व्यक्ति का परमेश्वर के प्रति उत्तर या प्रतिक्रिया है।

1 यूहन्ना 3:20-22
[20] क्योंकि परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है, और सब कुछ जानता है।
[21] हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है;
[22] और जो कुछ हम माँगते हैं, वह हमें उससे मिलता है, क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं और जो उसे भाता है वही करते हैं।

जब हमारा विवेक शुद्ध होता है, तो हमारा मन हम पर दोष नहीं लगाता और हम परमेश्वर के सामने आश्वस्त होते हैं। यदि हमारा मन हमें धिक्कारता है, अर्थात हमारा विवेक स्पष्ट नहीं है, तो हमारे अंदर कुछ "दोषभावना" है। परमेश्वर सभी चीजों को जानता है, इसलिए हमें सिर्फ युहन्ना 1:9 में बताए गए ज्ञात और अज्ञात पाप के बारे में जानने और स्वीकार करने और उसके लहू से शुद्ध होने की आवश्यकता है। फिर हम मसीह में विश्वास द्वारा एक साफ, शुद्ध विवेक के साथ परमेश्वर के सामने चलना जारी रखते हैं। हम उसकी आज्ञाकारिता में चलना जारी रखते हैं, जो उसकी दृष्टि में मनभावन है। हम परमेश्वर के सामने एक अच्छा विवेक बनाए रखते हैं।

झलक

1) जैसा कि इस अध्याय में चर्चा की गई है कि परमेश्वर के प्रति अच्छा विवेक रखने का क्या अर्थ है?
2) जल का बपतिस्मा लेने के बाद भी आप दैनिक जीवन के माध्यम से परमेश्वर के प्रति एक अच्छा विवेक कैसे बनाए रखते हैं?

7
कुछ समान्य प्रश्नों के उत्तर

इस अध्याय में हम कुछ सामान्य प्रश्नों के उत्तर के रूप में संक्षिप्त विवरण प्रदान करते हैं। इन उत्तरों के लिए धर्म ज्ञान और धर्मशास्त्र का आधार पहले से ही पिछले अध्यायों में बताया जा चुका है। इसलिए, इसे यहां दोहराया नहीं गया।

1) बपतिस्मा लेने की सही उम्र क्या है?

धर्म शास्त्र एक ऐसी आयु का वर्णन नहीं करता है जिस में किसी व्यक्ति को बपतिस्मा लेना होता है। इसलिए हमें सिर्फ धर्म शास्त्र में दिए गए पूर्वापेक्षाओं के साथ चलना है, जो कहता है कि एक व्यक्ति को बपतिस्मा लेने के लिए पश्चाताप करके प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु स्वीकार करना आवश्यक है। यह एक शिशु द्वारा नहीं किया जा सकता, और इसलिए शिशु बपतिस्मा कुछ ऐसा है जो पवित्रशास्त्र में निर्धारित नहीं है। फिर भी एक व्यक्ति जिस उम्र वो है यदि यीशु मसीह के सुसमाचार के संदेश और उसके अर्थ को व्यक्तिगत रूप से समझने, पापों से पश्चाताप और विश्वास करने में सक्षम है तो वह यीशु मसीह में जल का बपतिस्मा लेने के लिए तैयार है।

2) क्या उद्धार में एक विश्वासी को जल में बपतिस्मा लेने के लिए एक समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए?

किसी भी समय की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमारे लिए दर्ज सभी उदाहरणों में बताया गया है कि जैसे ही लोगों ने पश्चाताप और यीशु मसीह में विश्वास करने के लिए समर्पित हुए उन्हें जल में बपतिस्मा दिया गया। फिर भी, लोगों को जल के बपतिस्मा के अर्थ को समझने और स्वेच्छा से करने में मदद करने के लिए, अच्छा है

कि वे समय लेकर जल के बपतिस्मा को अच्छे से समझें और बिना किसी मजबूरी और दवाब के इसे पूरा करने का निर्णय करें।

3) हम कौनसी बपतिस्मा पद्धति इस्तेमाल करते हैं?

प्रभु यीशु द्वारा हमें दिए गए महान आदेश के आधार पर और प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार हमः यीशु के नाम से, मैं आपको पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा देता हूं पद्धति का उपयोग करते हैं।

4) किसी दूसरे व्यक्ति को कौन बपतिस्मा दे सकता है?

कोई भी शिष्य जिसे जल में बपतिस्मा दिया गया है, वह उस व्यक्ति को जिसने यीशु मसीह का अनुगमन करने का निर्णय किया है, जल का बपतिस्मा दे सकता है।

5) क्या मुझे फिर से बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है?

हालांकि एक शिशु पर जल का छिड़कना नए नियम में जल के बपतिस्मा की बाइबलीय पद्धति नहीं है, इसलिए इसे जल का बपतिस्मा नहीं माना जा सकता। इसलिए एक व्यक्ति जोकि बच्चे के रूप में जल छिड़का हुआ था, जब वह व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करेगा तो उसे जल में बपतिस्मा देने की आवश्यकता होगी।

कुछ लोगों के लिए, शायद उनके माता-पिता या मित्रों ने उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए प्रोत्साहित किया हो और उन्होंने इसे एक रीति रिवाज के रूप में किया हो, लेकिन वास्तव में मसीह में विश्वास द्वारा उद्धार का अनुभव नहीं किया। ऐसे मामलों में, हम लोगों को यीशु मसीह में विश्वास करते हुए जल में बपतिस्मा लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

कुछ मामलों में, लोग अपने विश्वास से भटक गए और भगवान के साथ चल सकते हैं, और अपने स्वयं के दिलों में महसूस कर सकते हैं कि वे प्रभु के लौटने के संकेत के रूप में पुनः बपतिस्मा लेना चाहते हैं। ऐसा करने के लिए उनका स्वागत है, अपने स्वयं के व्यक्तिगत चयन के एक अधिनियम के रूप में।

6) क्या पानी का बपतिस्मा उद्धार के लिए आवश्यक है या यह उद्धार की अभिव्यक्ति है?

मसीह में विश्वास के माध्यम से उद्धार पूरी तरह से अनुग्रह से है। जल बपतिस्मा मुक्ति प्राप्त करने की एक अभिव्यक्ति है। यद्यपि उनके सांसारिक मंत्रालय यीशु (उनके शिष्यों) ने उन लोगों को बपतिस्मा दिया जिन्होंने यीशु का अनुसरण करना चुना था, प्रभु ने चोर को स्वर्ग पर ले जाने का वादा किया, जिससे उद्धार प्राप्त हुआ। क्रॉस पर चोर के पास बपतिस्मा लेने का विकल्प नहीं था। इसी तरह, ऐसे बहुत से लोग होंगे जो धरती पर अपने अंतिम क्षणों में यीशु मसीह पर विश्वास करने का निर्णय ले सकते हैं, और बपतिस्मा लेने का अवसर नहीं हो सकता है। उन्हें मसीह में विश्वास के माध्यम से बचाया जाता है। हममें से जो बच गए हैं, उनके लिए पानी का बपतिस्मा आज्ञाकारिता का विषय है जिसे हमें तुरंत पूरा करना चाहिए।

7) क्या हम मरे हुओं के लिए बपतिस्मा ले सकते हैं?

कुछ लोग 1 कुरिन्थियों 15:29, यह पूछने के लिए कि क्या हम "प्रॉक्सी" में बपतिस्मा ले सकते हैं, जो पहले से ही मृत हैं।

1 कुरिन्थियों 15:29
अन्यथा, वे क्या करेंगे जो मृतकों के लिए बपतिस्मा लेते हैं, अगर मृत बिल्कुल नहीं उठते हैं? फिर उन्हें मृतकों के लिए बपतिस्मा क्यों दिया जाता है?

1 कुरिन्थियों 15 में, पौलुस यह सच्चाई स्थापित कर रहा है कि मृत्यु के पश्चात जीवन है और मृतकों के लिए पुनरुत्थान है। ऐसा करके वह एक ब्यान देता है कि "वे" (नाकि हम) मृतकों के लिए बपतिस्मा देते हैं। "वे लोग" वास्तव में मसीही विश्वासी नहीं थे बल्कि वे तो ऐसे लोग थे जोकि विश्वास करते थे कि किसी रीति रिवाज अनुसार बपतिस्मा के द्वारा वे उन लोगों के लिए कोई अनुष्ठान करके उनकी मृत्यु-पश्चात जीवन को प्रभावित कर सकते हैं जोकि पहले से ही मृतक हैं। वह उनके अभ्यास का समर्थन नहीं कर रहा, बल्कि सिर्फ यह बताने के लिए उनके अभ्यास की ओर इशारा कर रहा है कि यहां तक कि उन्हें भी मृत्यु पश्चात जीवन में

विश्वास है। नए नियम में ऐसा कोई वचन नहीं है जो किसी भी तरह से मृतकों के लिए बपतिस्मा का संकेत देता हो। इसलिए इस सवाल का जवाब जोरदार और स्पष्ट "ना" है। हम मृतकों की ओर से बपतिस्मा नहीं लेते हैं।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण ह्रदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपकेलिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने ह्रदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वाासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर परिवारिक कलीसिया,** एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस परामर्श

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस परामर्श व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों	**व्यवहार सम्बंधी विकार**
व्यक्तिगत समायोजन	**व्यक्तित्व विकार**
संबंधपरक चुनौतियां	**मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले	**तनाव / आघात**
कार्य संबंधित मुद्दे	**शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
परिवार /दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक	**आत्मिक समस्याएं**
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी	**ज़िंदगी की सीख**

क्रिसलिस परामर्श सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए:

Website: chrysalislife.org
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, मसीही अगुवों के लिए सभाओं का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से “ऑल पीपल्स चर्च,” बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 50200068829058
IFSC Code: HDFC0004367
Bank: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for

"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

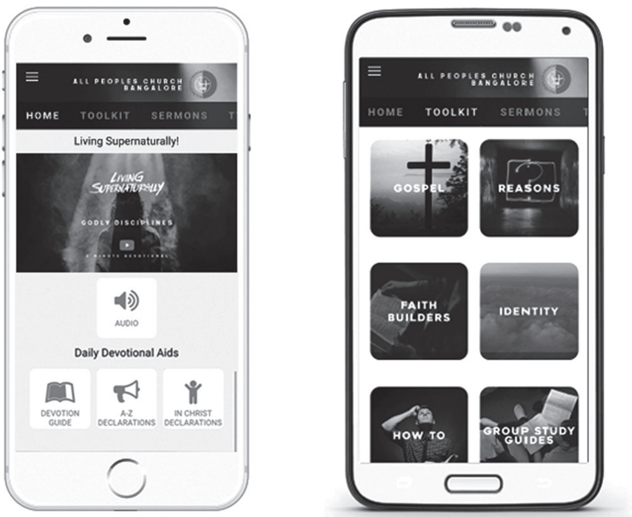

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत केबैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

एपीसी-बीसी में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक** (UTC+**5:30**) कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल apcbiblecollege.org/elearn.

के माध्यम से स्वयं की गति से सीखना ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी केलिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: apcbiblecollege.org

यीशु मसीह के विश्वासियों के तौर पर हमारी यात्रा में जल का बपतिस्मा एक महत्वपूर्ण अनुभव है। हम सब जिन्होंने मसीह पर विश्वास करने और उसका अनुसरण करने का निर्णय लिया है, किसी समय यह महत्वपूर्ण कदम उठाएंगे। जल का बपतिस्मा प्रभु यीशु मसीह द्वारा उन सभी केलिए एक आदेश है जो उसका अनुसरण करने का निर्णय लेते हैं। इसलिए इस आदेश का पालन करना होगा। जैसे कि आप जल का बपतिस्मा लेने केलिए तैयार होते हैं तो यह परमेश्वर के वचन से एक सरल अध्ययन है जोकि आपको इसका अर्थ और महत्व समझने में मदद करता है।

हम जल के बपतिस्मे से संबंधित छह महत्वपूर्ण सच्चाइयों को सीखते हैं:

1) पश्चाताप का संकेत
2) सभी धार्मिकता को पूरा करना
3) एक साक्षी कि आप उसके शिष्य हैं
4) यीशु मसीह में आपके विश्वास की साक्षी
5) यीशु में आपकी पहचान की एक घोषणा
6) एक अच्छे विवेक की प्रतिक्रिया

हम कुछ सामान्य प्रश्नों के उत्तर भी देते हैं जो लोग जल के बपतिस्मे के संबंध में पूछते हैं।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org

ALL PEOPLES CHURCH